INTERNATIONAL JOURNAL OF NOVEL RESEARCH AND DEVELOPMENT (IJNRD)
© 2026 IJNRD | Volume 11, Issue 5, May 2026 | ISSN: 2456-4184 | IJNRD.ORG

सिनेमा में भारत विभाजन का चित्रण : एक ऐतिहासिक विश्लेषण

राज कुमार[1]
शोध छात्र, इतिहास विभाग, वी.रा.अ.लो. राजकीय महिला महाविद्यालय बरेली (उ.प्र.)
डॉ. दिनेश सिंह[2]
असिस्टेंट प्रोफेसर, इतिहास विभाग, वी.रा.अ.लो. राजकीय महिला महाविद्यालय बरेली (उ.प्र.)
Email-drdineshhistory@gmail.com
Affiliated to MJP Rohikkhand University Bareilly (U.P.)

शोध सार

1947 में भारत का विभाजन आधुनिक इतिहास की सबसे बड़ी मानवीय त्रासदियों में से एक माना जाता है। इस घटना ने न केवल राजनीतिक भूगोल को बदला बल्कि सामाजिक, सांस्कृतिक और मानवीय संबंधों को भी गहराई से प्रभावित किया। साहित्य, इतिहास और कला के साथ–साथ सिनेमा ने भी इस त्रासदी को अपनी रचनात्मक अभिव्यक्ति का विषय बनाया। हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं की फिल्मों में विभाजन से उत्पन्न हिंसा, विस्थापन, साम्प्रदायिक तनाव तथा मानवीय संवेदनाओं को विभिन्न रूपों में चित्रित किया गया है। प्रस्तुत शोध–पत्र में सिनेमा के माध्यम से भारत विभाजन के चित्रण का विश्लेषण किया गया है तथा प्रमुख फिल्मों के उदाहरणों के माध्यम से यह समझने का प्रयास किया गया है कि सिनेमा किस प्रकार इस ऐतिहासिक घटना की स्मृति को संरक्षित करता है।

मुख्य शब्द : विभाजन, सिनेमा, विस्थापन, साम्प्रदायिकता।

प्रस्तावना

1947 का भारत विभाजन भारतीय उपमहाद्वीप के इतिहास की एक महत्वपूर्ण घटना थी। ब्रिटिश शासन की समाप्ति के साथ भारत और पाकिस्तान दो स्वतंत्र राष्ट्र के रूप में अस्तित्व में आए। इस प्रक्रिया में व्यापक हिंसा, साम्प्रदायिक दंगे और बड़े पैमाने पर जनसंख्या का विस्थापन हुआ। इतिहासकारों के अनुसार लगभग 1.5 करोड़ लोग विस्थापित हुए और लाखों लोगों की मृत्यु हुई।[1] साहित्य और इतिहास के साथ–साथ सिनेमा ने भी इस त्रासदी को अभिव्यक्त करने का प्रयास किया है। भारतीय सिनेमा में विभाजन को केवल एक राजनीतिक घटना के रूप में नहीं बल्कि मानवीय पीड़ा और सामाजिक विघटन के रूप में चित्रित किया गया है।

भारत विभाजन की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

ब्रिटिश शासन के अंतिम वर्षों में भारतीय राजनीति में कई महत्वपूर्ण परिवर्तन हुए। मुस्लिम लीग द्वारा अलग राष्ट्र की मांग, कांग्रेस और अन्य राजनीतिक दलों के बीच मतभेद तथा ब्रिटिश सरकार की नीतियों ने विभाजन की प्रक्रिया को तेज किया। 1947 में ब्रिटिश सरकार ने भारत को स्वतंत्रता देने का निर्णय लिया, जिसके साथ ही देश का विभाजन होना भी सुनिश्चित हो गया। पंजाब और बंगाल जैसे प्रांतों का विभाजन किया गया और लाखों लोग सीमा पार करने को मजबूर हुए।[2] इस प्रक्रिया में व्यापक हिंसा और सामाजिक विघटन हुआ, जिसका प्रभाव भारतीय समाज पर आज भी देखा जा सकता है।

सिनेमा और इतिहास का संबंध

सिनेमा समाज और इतिहास को समझने का एक प्रभावशाली माध्यम है। फिल्में केवल मनोरंजन का साधन नहीं बल्कि सामाजिक यथार्थ को प्रस्तुत करने का माध्यम भी हैं। इतिहास को सिनेमा में कई तरीकों से प्रस्तुत किया जाता है–

- वास्तविक घटनाओं का पुनर्निर्माण,
- काल्पनिक कथाओं के माध्यम से ऐतिहासिक संदर्भ,
- सामाजिक और सांस्कृतिक प्रभावों का चित्रण,

भारत विभाजन जैसे जटिल विषय को फिल्मों में अक्सर व्यक्तिगत कहानियों के माध्यम से प्रस्तुत किया गया है, जिससे दर्शक उस त्रासदी को भावनात्मक रूप से महसूस कर सकें।

विभाजन पर आधारित प्रमुख फिल्में

1. गरम हवा (1973)

एम.एफ. सत्तू के निर्देशन व बलराज साहनी के अभिनय से सजी फिल्म गर्म हवा (1973) में भारत–पाकिस्तान विभाजन के बाद भारत में रह गये मुस्लिम परिवारों की कठिनाईयों और भावनात्मक सघर्षों को यथार्थवादी ढंग से दिखाया गया है। फिल्म की कहानी आगरा के एक जूता व्यापारी सलीम मिर्जा (बलराज साहनी) के परिवार के बारे में बताती है जिनका पूरा परिवार विभाजन में पाकिस्तान चला गया लेकिन सलीम मिर्जा भारत में ही रह जाते हैं, तत्पश्चात धीरेधीरे उनके हालात कैसे बदलते हैं? कैसे उनका व्यापार गिरने

लगता है, बैंक लोन नहीं देता है और समाज में उनके खिलाफ अविश्वास बढ़ने लगता है जिस कारण उनका परिवार आर्थिक व मानसिक संकट से गुजरता है। इस तरह यह फिल्म दिखाती है कि विभाजन केवल सीमा का बंटवारा नहीं था, बल्कि लोगों की ज़िन्दगी, रिश्तों और पहचान पर भी गहरा असर डाला था।[4]

2. तमस (1988)

गोविंद निहलानी के निर्देशन में बनी यह फिल्म भीष्म साहनी के प्रसिद्ध उपन्यास ''तमस'' (1974) पर आधारित है। फिल्म की कहानी 1947 के भारत–विभाजन के समय एक गरीब चर्मकार नत्थू को पैसे के लालच में धोखे से एक सुअर मारने के लिए कहा जाता है, जिसे बाद में एक मस्जिद के सामने फेंक दिया जाता है, जिससे शहर में साम्प्रदायिक तनाव व दंगे भड़क जाते है। फिल्म के मुख्य कलाकारों में ओम पुरी, अमरीश पुरी और पंकज कपूर के दमदार अभिनय फिल्म की मूल भावना को बहुत ही यथार्थ के साथ अभिव्यक्त किया जिसके लिए 1988 में इस फिल्म को "राष्ट्रीय एकता पर सर्वश्रेष्ठ फिल्म'' के लिए "नरगिस दत्त पुरस्कार" प्रदान किया गया।[5]

3. ट्रेन टू पाकिस्तान (1998)

पामेला रूक्स के निर्देशन में बनी यह फिल्म खुशवंत सिंह के उपन्यास पर आधारित है जिसकी कहानी पंजाब के एक छोटे से गाँव मनो मजरासे से शुरू होती है, जहाँ पहले हिंदू और मुस्लिम शांति से रहते हैं। लेकिन विभाजन के कारण अचानक एक दिन पाकिस्तान से लाशों से भरी ट्रेन आने के बाद गाँव में डर और नफरत के बीच साम्प्रदायिक तनाव उत्पन्न हो जाता है। फिल्म का मुख्य पात्र जुग्गत सिंह (जग्गा), जो पहले एक साधारण अपराधी होता है, अंत में अपनी प्रेमिका और गाँव के मुस्लिम लोगों को बचाने के लिए अपनी जान कुर्बान कर देता है।

यह फिल्म दिखाती है कि विभाजन के समय हिंसा और नफरत के बीच भी इंसानियत और प्रेम सबसे बड़ा मूल्य बना रहा।[6]

4. पिंजर (2003)

चंद्र प्रकाश द्विवेदी के निर्देशन में बनी यह फिल्म अमृता प्रीतम के प्रसिद्ध उपन्यास "पिंजर" पर आधारित एक हिंदू लड़की पुरो (उर्मिला मातोंडकर) की कहानी है, जिसे एक मुस्लिम युवक राशिद (मनोज वाजपेई) अगवा कर लेता है। शुरुआत में पूरो अपने परिवार के पास लौटना चाहती है, लेकिन परिवार समाज के डर से उसे अपनाने से मना कर देता है। धीरे–धीरे वह अपनी नई पहचान और जीवन को स्वीकार करने लगती है। और अंत में, विभाजन के दौरान वह इंसानियत को चुनते हुए दूसरी औरतों की मदद करती है।

इस प्रकार यह फिल्म विभाजन के दौरान महिलाओं की स्थिति और उनके साथ हुए अत्याचारों को मार्मिक रूप से दिखाते हुए बताती है कि कैसे विभाजन के समय महिलाओं को सबसे ज्यादा दर्द और अन्याय झेलना पड़ा।[7]

5. अर्थ (1998)

दीपा मेहता के निर्देशन में बनी फिल्म 'अर्थ' भारत–विभाजन (1947) के समय की कहानी है, जो लाहौर में रहने वाली एक छोटी पारसी लड़की लेनी सेथना (माईया सेथना) की नज़र से दिखाई जाती है। उसकी आया शांता (नंदिता दास) से दो दोस्त, एक मुस्लिम लड़का दिलनबाज (आमिर खान) और एक सिख लड़का हसन (राहुल खन्ना) प्यार करते हैं। शुरुआत में सबके बीच दोस्ती और मेल–जोल होता है, लेकिन जैसे–जैसे हिंदू–मुस्लिम दंगे बढ़ते हैं, हालात बदल जाते हैं। अंत में नफरत और हिंसा इंसानियत पर भारी पड़ती है, और रिश्ते टूट जाते हैं। फिल्म दिखाती है कि विभाजन ने आम लोगों की ज़िंदगी को कितना दर्दनाक बना दिया था।[8]

सिनेमा में विभाजन की प्रमुख थीम

विस्थापन और शरणार्थी जीवन

कई फिल्मों में दिखाया गया है कि किस प्रकार लोग अपने घर और संपत्ति छोड़कर नए स्थानों पर बसने के लिए मजबूर हुए। यह विस्थापन केवल भौतिक नहीं बल्कि मानसिक और सांस्कृतिक भी था।

साम्प्रदायिक हिंसा

विभाजन के दौरान हुए दंगे और हिंसा को फिल्मों में यथार्थवादी तरीके से प्रस्तुत किया गया है। इससे उस समय की सामाजिक स्थिति का स्पष्ट चित्र मिलता है।

महिलाओं की स्थिति

विभाजन के दौरान महिलाओं को अपहरण, बलात्कार और जबरन विवाह जैसी घटनाओं का सामना करना पड़ा। इस विषय को कई फिल्मों में प्रमुखता से दिखाया गया है।

मानवीय संबंधों का टूटना

विभाजन के कारण पड़ोसी, मित्र और परिवार तक एक–दूसरे के विरोधी बन गए। यह मानवीय त्रासदी फिल्मों में गहराई से दिखाई देती है।

सिनेमा में विभाजन की स्मृति

सिनेमा विभाजन की ऐतिहासिक स्मृति को जीवित रखने का महत्वपूर्ण माध्यम है। नई पीढ़ी, जिसने विभाजन की घटनाओं को प्रत्यक्ष रूप से नहीं देखा, वह फिल्मों के माध्यम से इस इतिहास को समझ सकती है। फिल्में दर्शकों को यह भी बताती हैं कि राजनीतिक निर्णयों का आम लोगों के जीवन पर कितना गहरा प्रभाव पड़ता है।

निष्कर्ष

भारत विभाजन केवल एक राजनीतिक घटना नहीं बल्कि एक मानवीय त्रासदी थी जिसने करोड़ों लोगों के जीवन को प्रभावित किया। सिनेमा ने इस त्रासदी को विभिन्न दृष्टिकोणों से प्रस्तुत किया है और समाज को उस इतिहास से जोड़ने का महत्वपूर्ण कार्य किया है। फिल्मों के माध्यम से विभाजन के दौरान हुई हिंसा, विस्थापन, सांस्कृतिक संकट और मानवीय पीड़ा को समझा जा सकता है। इस प्रकार सिनेमा इतिहास की स्मृति को संरक्षित करने का एक महत्वपूर्ण माध्यम है।

संदर्भ सूची

1. *Talbot, Lal & Singh, Gurpal (2009). The partition of India. Cambridge University Press.*
2. *Khan, Yasmin (2007). The great partition: The making of India and Pakistan. Yale University Press.*
3. *Pandey, Gyanendra (2001). Remembering partition : Violence, nationalism and history in India. Cambridge University Press.*
4. *Dwyer, Rachel (2014). Bollywood's India: Hindi cinema as a guide to modern India. Reaktion Books.*
5. *Sahni, Bhisham (1974). Tamas. Rajkamal Prakashan.*
6. *Singh, Khushwant (1956). Train to Pakistan. Penguin Books.*
7. *Pritam, Amrita (1950). Pinjar. Vani Prakashan.*
8. *Bapsi Sidhwa, (1991). Cracking India, Minneapolis: Milkweed Editions.*
9. *Butalia, Urvashi (1998). The other side of silence: Voices from the partition of India. Penguin Books.*

Copyright & License:

© Authors retain the copyright of this article. This work is published under the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY 4.0), permitting unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited.